12/8/1964 रात्रि क्लास :– तुम बच्चों को तो अच्छी रीति याद रहनी है। बूढ़ियाँ भी समझें अब वापिस शिवबाबा पास जाना है। अन्दर कुछ तो चलना चाहिए ना। भक्त होते हैं, किसको राम, किसको कृष्ण याद आता। बच्चों को नई बात याद है अब वापिस जाना है, फिर आकर हम नया चोला लेंगे। इसी याद में रहें तो भी बड़ी ज़बरदस्त कमाई है। हम बाप के पास जाते हैं फिर वापिस आवेंगे। जितना याद करेंगे उतना एवर हेल्दी का वर्सा पाते रहेंगे। इतना सहज है। सिर्फ प्रैक्टिस हो जाय याद करने की। बरोबर नंगे आए थे, अब फिर नंगे वापिस जाना है, सिर्फ यह याद करते रहें। कहा जाता है सेकेण्ड में जीवनमुक्ति; परन्तु मनुष्यों को अर्थ का पता न है। यह तकदीर के लिए बड़ी सहज तदबीर है। जीवनमुक्ति के लिए सा० होता है। गोद में जन्म लिया और वर्सा पाय लिया। ऊँच पद पाने लिए और कुछ न करे तो भी आ जावेंगे। पुरुषार्थ प्रिंसीपुल रहता है। नई बात है ना। मनुष्य समझते, हो नहीं सकता। समझाना है, गाया हुआ है, सेकेण्ड में जीवनमुक्ति। इसका अब रास्ता बताते हैं। सतयुगी देवी–देवता जीवनमुक्त हैं ना। यह धर्म स्थापन होते हैं संगम पर। अवतार भी कल्प के संगम का गाया हुआ है। बाप अच्छी रीति समझाते हैं। जीवनमुक्त थे, अब जीवनबन्ध में हैं। बच्चों को नशा रहना चाहिए हमको पढ़ाते कौन हैं! प०पि०प० भगवानुवाच्य भी गीता में है; परन्तु साकार होने से इतना नशा न(हीं) रहता। यहाँ तुम बच्चों को प्रैक्टिकल नशा है। ॐ